सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

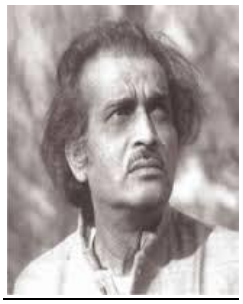

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में 15 सितंबर, 1927 को हुआ | उन्होंने एंग्लो-संस्कृत उच्च विद्यालय, बस्ती से हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करके क्वींस कॉलेज वाराणसी में अध्ययन किया | वर्ष 1949 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की | उन्होंने आडिटर जनरल इलाहाबाद कार्यालय में कार्य भी किया | कुछ समय के लिए अध्यापन करने के पश्चात आकाशवाणी में सहायक प्रोड्यूसर रहे | वर्ष 1963 में 'दिनमान' साप्ताहिक पत्रिका के उपसंपादक नियुक्त हुए | जीवन के अंतिम दिनों में बच्चों की साप्ताहिक पत्रिका 'पराग' के संपादक रहे |

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना तीसरे सप्तक के कवि थे | तीसरे सप्तक के अपने वक्तव्य में उनका कहना है, जो सत्य है उसे चुपचाप अपनाए रहने भर से काम नहीं चलेगा | बल्कि जो असत्य है उसका विरोध भी करना पड़ेगा और मुंह खोलकर कहना पड़ेगा कि वह गलत है | 'उन्होंने अपने आलोचकों की तीखी आलोचना सुननी पड़ी थी लेकिन फिर भी उन्होंने एक नया रास्ता अपनाया और नयी कविता को एक नया कथ्य और नया रूप दिया | उन्होंने हमेशा नया लिखा | वे पहले के बनाए हुए रास्तों पर नहीं चले | उन्होंने कविता के माध्यम से कहा-लीक पर वे चलें जिनके/चरण दुर्बल और हारे हैं/ हमें तो अपनी यात्रा से बने/ ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं |'

उन्होंने पुराने बिंबों-प्रतीकों को भी तोड़ा और जीवन से नई बिंबों-प्रतीकों को लेकर अपनी कविता की रचना की | काव्य भाषा और शैली आदि के क्षेत्र में उन्होंने नए प्रयोग किए | तत्कालीन समय के राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक संकट को संप्रेषणी बोलचाल की भाषा को ही अपनी काव्य भाषा बनाई | उन्होंने दलितों एवं निस्सहायों के मसीहा के रूप में युग जीवन की स्थिति का गहन अध्ययन किया | आत्मघुटन, विसंगति और जगपीड़ा उनकी कविता में सर्वत्र बिखरी मिलती है | वे कहते हैं - दर्द यह किससे कहूं ?/मुझसे विद्रोह करती हैं/मेरी ही परछाइयां/दर्द यह किससे कहूं ?

रचनाएं-

निबंध संग्रह - चरचे और चरखे

उपन्यास - पागल कुत्तों का मसीहा, सोया हुआ जल, सूने चौखटे

कहानी संग्रह - क्षितिज के पार, बदला हुआ कोण, पराजय का क्षण, लड़ाई, कच्ची सड़क, अंधेरे पर अंधेरा

नाटक - बकरी, कल फिर भात आएगा, लड़ाई, अब गरीबी हटाओ, राजा बाज बहादुर और रानी रूपमती, हवालात, होरी धूम मच्यो री, पीली पत्तियां

बाल नाटक - लाख की नाक, भौं-भौं-खौं-खों

बाल साहित्य- बतूता का जूता, मंहगू की टाई, अपना दाना, हाथी की पों, अनाप-शनाप, बुद्ध की करूणा

काव्य संग्रह - काठ की घंटियां, बांस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएं, जंगल का दर्द, खूटियों पर टंगे लोग, कोई मेरे साथ चले

23 सितंबर,1983 को उनका दिल्ली में निधन हुआ |